विनोबा कथावली

■ वर्ष : प्रथम ■ अंक : ६ ■ जनवरी २०२५

अशिक्षा का सही समाधान

राघुचीवाड़ी (धाराशिव): "आज के मोबाइल-केंद्रित समय में छात्रों की पढ़ने की आदत घट गई है। इससे हम गहन सोच, एकाग्रता और सांस्कृतिक समझ खो रहे हैं। किताबें हमें कल्पनाशक्ति और सहानुभूति सिखाती हैं। पढ़ाई का अभाव हमें सतही ज्ञान तक सीमित कर, हमारे मानसिक और भावनात्मक विकास को बाधित करता है।"

ये है, जिला परिषद प्राथमिक शाला, राघुचीवाड़ी, के शिक्षक श्री समाधान शिकेतोड। वे कहते हैं, "ग्रामीण क्षेत्र में ज्यादातर छात्रों के माता-पिता दिहाड़ी मजदूर हैं, जिससे घर का माहौल पढ़ाई के लिए अनुकूल नहीं रहता। इसलिए मैंने पहले हर कक्षा कक्ष में और फिर घर-घर वाचनालय का विचार किया, ताकि बच्चों को घर पर ही पढ़ाई का माहौल मिल सके।"

समाधान जी कहते हैं, "सिर्फ पुस्तकालय होने से कुछ नहीं होता। कई स्कूलों में सरकार, एनजीओ और दानदाताओं के सहयोग से पुस्तकालय स्थापित हैं, लेकिन शिक्षक इसे कितनी रचनात्मकता और अनुशासन से चलाते हैं इसपर इसकी सफलता निर्भर करती है। पुस्तकालय का एक ऐसा सशक्त और निरंतर चलने वाला तंत्र विकसित होना चाहिए, जिससे शैक्षणिक परिणाम भी बेहतर हों।"

यह करना आसान नहीं था।समाधान जी ने विशेषज्ञों के सहयोग से कार्यशालाएं आयोजित की और छात्रों और अभिभावकों को पढ़ने का महत्व समझाया।

अपने मनोविज्ञान प्रशिक्षण का उपयोग करते हुए उन्होंने हर घर के लिए किताबें और पत्रिकाओं का चुनाव किया और छात्रों को घर पर एक कोना पढ़ाई के लिए समर्पित करने में मदद की। नियमित घर-घर जाकर पठन के अभ्यास को मजबूत किया। इस पूरे प्रोजेक्ट की वित्त सहायता 'यशवंतराव चव्हाण केंद्र फेलोशिप' द्वारा हुई।

इस पहल का असर यह हुआ कि छात्रों ने नियमित रूप से किताबें पढ़ना शुरू किया और उसके बारे में लिखना भी।

समाधान जी महाराष्ट्र के उन 20 शिक्षकों में से हैं जिन्हें SCERT, क्वेस्ट और यूनिसेफ के प्रतिष्ठित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में चुना गया था। बालभारती पाठ्यपुस्तक मंडल के सदस्य, DIET और अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विशेषज्ञ होने के नाते वे हमेशा यह सोचते थे कि छात्रों के बीच पढ़ने की आदत को कैसे सरल और प्रभावी तरीके से बढ़ाया जा सके।

समाधान जी ने अपने ज्ञान और अनुभव का बखूबी उपयोग कर पठन की सरल आदतों से छात्रों के सीखने के परिणामों में सुधार किया है। विनोबा टीम उनके इस बेहतरीन कार्य को सलाम करती है। ■

मस्ती की पाठशाला!

खेल-कूद, दिमागी पहेलियाँ और रोचक शैक्षिक गतिविधियों से आई इस स्कूल में नई रोशनी

पेज 4

विनोबा का लाइब्रेरी बैग उपक्रम

इस आकर्षक और पारदर्शी लाइब्रेरी बैग ने बच्चों को किताबों की ओर आकर्षित करने का महत्वपूर्ण काम किया है।

पेज 7

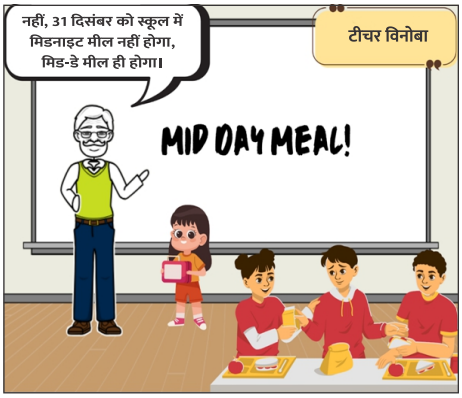

गाँव का कूल स्कूल

बाबुर्डी घुमट (अहमदनगर): अहमदनगर के बाबुर्डी घुमट जिला परिषद शाला की शिक्षिका श्रीमती सोहनी पुरनाले के सामने ऐसी कई चुनौतियां थी जो अक्सर लोगों को हिम्मत हारने पर मजबूर कर देती हैं। उन्हें अक्सर ऐसे बच्चों को पढ़ाना पड़ता था जो गन्ने के खेतों में और फिर उससे बनने वाले उत्पाद की फैक्ट्रीयों में काम करने वाले परिवारों के होते थे। ये बच्चे अक्सर स्कूल छोड़कर अपने माता-पिता के साथ काम पर चले जाते थे। लेकिन सोहनी जी ने कभी हार नहीं मानी।

उन्होंने बड़ी मेहनत से स्कूल में पहले विज्ञान प्रदर्शनियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसी रोचक गतिविधियाँ शुरू कीं, जिससे बच्चे स्कूल में रुकने लगे। माता-पिता महंगे निजी स्कूलों के मुकाबले इस जिला परिषद स्कूल को ज़्यादा पसंद करने लगे। समाज के विभिन्न घटकों से समर्थन और योगदान बढ़ने लगा। स्मार्ट टीवी, कम्प्यूटर और सोलर पावर सिस्टम इत्यादि आने लगे। अब बच्चे मोबाइल गेम्स की बजाय कोडिंग सीखने लगे और पॉवरपाईन्ट बनाने लगे।

बच्चे जीवन के अन्य कौशल भी सीखें, इसलिए अभिभावकों को प्रोत्साहित किया गया कि वे बच्चों को शॉपिंग पर ले जाएँ, पैसे का हिसाब सिखाएं, रोज़मर्रा के छोटे कामों को समझें। जन्मदिन पर केक की जगह बच्चों को नोटबुक्स गिफ़्ट करने का रिवाज शुरू हुआ, ताकि बच्चे हैंडराइटिंग का अभ्यास कर सकें।

सोहनी जी ने साबित कर दिया कि स्कूल सिर्फ इमारतों और सुविधाओं से नहीं बनता। असली स्कूल तो वहाँ होता है, जहाँ के शिक्षकों को बच्चों के भविष्य के प्रति प्रेम होता है।

परिवर्तन के नायक

रायपुर: एक छोटे से, दूरदराज़ गांव में, शिक्षक चंपेश कुमार को एक ऐसी चुनौती का सामना करना पड़ा, जिससे शायद कई लोग हार मान लेते जैसे कम उपस्थिति, खासकर मानसून के मौसम में। छात्र टूटे हुए पुल को पार करके स्कूल पहुँचने में कठिनाई महसूस करते थे, और संसाधनों की कमी ने स्थिति को और भी बिगाड़ दिया था।

परिवर्तन लाने की दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ, उन्होंने ग्राम पंचायत के साथ मिलकर पुल की मरम्मत करवाई। उन्होंने छात्रों के लिए रेनकोट इकट्ठे किए। साथ ही कक्षा को एक प्रेरणादायक और मजेदार स्थान में बदल दिया, जिसमें खेलों और असल जीवन के उदाहरणों का इस्तेमाल किया, ताकि पढ़ाई और भी रोचक बन सके।

चंपेश जी ने पूरे समुदाय को भी साथ में लिया। अभिभावकों के साथ बैठकें आयोजित कीं, जिसमें उन्हें बच्चों की शिक्षा में सक्रिय भागीदार बनने के लिए प्रेरित किया।

चंपेश जी के कार्य करते रहे। उनके अथक प्रयासों का परिणाम मिलने लगा। छात्रों की उपस्थिति में सुधार हुआ और उनमें सीखने की जिज्ञासा और उत्साह बढ़ने लगे।

टीम विनोबा ऐसे शिक्षक को कैसे नज़रअंदाज़ कर सकती है, जो ग्रामीण शिक्षा में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए छोटे लेकिन ठोस कदम उठा रहे हैं!

‘बच्चे खुद सीख लेते हैं, बस उन्हें सीख के दिखाओ’

आज भी मैं कुछ न कुछ नया ढूंढकर वो सीखने की कोशिश करता हूँ। मेरे छात्र मुझे रोज़ ध्यान से देख रहे हैं कि मैं पढ़ाई कर रहा हूँ। फिर जब मैं उन्हें बताता हूँ कि सीखना कितना ज़रूरी है, तो वे मेरी बात मानते हैं। - श्री गिरीधर पानघाटे

उपरवाही (चंद्रपूर): श्री गिरीधर पानघाटे 25 साल से मंझे हुए शिक्षक हैं। पिछले साल जब वे चंद्रपुर जिले के कोरपना ब्लॉक की उपरवाही जिल्हा परिषद शाला में आए, तो इस शाला के लिए अनुभव और ज्ञान की रोशनी भी लेकर आए। वे मानते हैं कि रोज़मर्रा की चीजों का इस्तेमाल कर के बच्चों को पढ़ाना सबसे प्रभावी तकनीक होती हैनिरंतर सीखते रहना कितना महत्वपूर्ण है ये छात्रों को समझाने के लिए वे खुद पढ़ाई करते रहते हैं।

उन्होंने पिछले ढाई दशकों में, शिक्षक के रूप में कार्य करते हुए, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल; IISR, पुणे; अगस्त्य फाउंडेशन, कुप्पम; राज्य विज्ञान संस्था, नागपुर; और IIT गांधीनगर के एकलव्य कार्यक्रम जैसे कई प्रतिष्ठित संस्थानों से प्रशिक्षण प्राप्त किया।

वे इतना सब क्यूँ करते हैं?

“बात ये है कि जिला परिषद शालाओं में आने वाले छात्रों को अक्सर ग़रीब और पिछड़ा हुआ माना जाता है। मैं नहीं चाहता कि वे अपने दिल और दिमाग में ऐसी भावना ले कर बड़े हों। इसलिए मैं उन्हें जो कुछ भी बेहतर और नवीनतम दे सकता हूँ, जैसे कि अंग्रेजी बोलने की क्षमता, प्रस्तुति कौशल, और तकनीक, वह उन तक लाने की कोशिश करता हूँ,” वे कहते हैं।

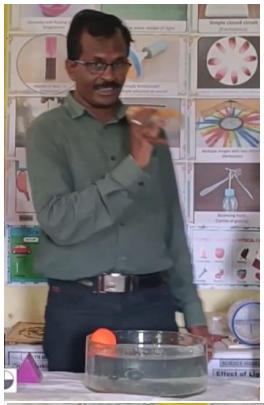

गिरीधर जी उन्हें पढ़ाते हैं, अभ्यास कराते हैं और प्रस्तुतियाँ देने के लिए प्रेरित करते हैं। छात्र भी सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

हाल ही में, कक्षा 6 और 7 की दो छात्राओं ने एक राज्य स्तरीय कार्यक्रम में ऑडेसिटी सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल करने के कौशल पर शानदार प्रस्तुति दी।

ज़रूरत पड़ने पर, वे पढ़ाई की लिए आवश्यक सामग्री खरीदने के लिए अपनी जेब से पैसे भी खर्च कर लेते हैं। बच्चों की शिक्षा में संसाधन की कमी हो, तो वे सरकार का इंतजार नहीं करते। हाल ही में, उन्होंने अपने छात्रों के लिए एक माइक्रोस्कोप खरीदा, क्योंकि स्कूल द्वारा दिये गए माइक्रोस्कोप से काम नहीं बन रहा था। उन्होंने गणित और विज्ञान के लिए लगभग 200 TLMs बना लिए हैं। बिना रुके वे सतत नये नये TLMs बनाते ही रहते हैं। स्कूल के अलावा अपने घर पर भी बच्चों के लिए स्टडी लैब उन्होंने बनाई है।

गिरीधर जी विभिन्न विषयों पर वीडियो बनाते हैं, ताकि छात्र जरुरत पडने पर वापस जाकर सीख सकें। इस तरह, वे न्यूनतम समय में अधिकतम विषयों को कवर करते हैं, और कोई भी छात्र किसी पाठ से वंचित भी नहीं रहता। उनके यूट्यूब चैनल “गिरीधर पानघाटे” पर 4.94 लाख सब्सक्राइबर हैं, क्यूंकि उसपर 300 से अधिक उपयोगी वीडियो हैं।

श्री गिरिधर पानघाटे जैसे शिक्षकों का निरंतर कार्य ही विनोबा अभियान को शक्ति प्रदान करता है।

मस्ती की पाठशाला!

वार्शी (नाशिक): हर्षाली रमेश अहिरराव, जिला परिषद प्राथमिक विद्यालय वार्शी की शिक्षिका हैं। स्कूल में बच्चों की उपस्थिति कम थी। कई बच्चे स्कूल छोड़कर काम करने, छोटे भाई-बहनों की देखभाल करने या खेलने चले जाते थे। अभिभावकों से बात करने के बाद भी कोई खास सुधार नहीं हुआ।

स्कूल में 'बस्ता मुक्त शनिवार' गतिविधि बहुत दिनों से बंद थी। हर्षाली जी ने इसे शुरू करने का निर्णय लिया। उन्होंने घोषणा की कि शनिवार को बस्ता लाने की जरूरत नहीं है। बच्चे खुश हो गए।

शनिवार को, हर्षाली जी ने अपने सहकर्मियों श्री संदीप पगार और श्रीमती शालिनी निकम के साथ मिलकर खेल-कूद, दिमागी पहेलियाँ और रोचक शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन किया। बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। खेल खेल में बच्चे बहुत कुछ सीखने लगे।

इस छोटे से प्रयास का बड़ा असर हुआ। बच्चों की उपस्थिति बढ़ने लगी, और वे हर शनिवार का बेसब्री से इंतजार करने लगे। धीरे धीरे हर्षाली जी ने शारीरिक और बौद्धिक खेल, और फिर शैक्षणिक गतिविधियाँ भी शामिल की। इन गतिविधियों की वीडियो बनाई, जो केंद्र, और ब्लॉक स्तर के व्हाट्सएप ग्रुप्स में प्रसारित किए गए। स्कूल का माहौल सकारात्मक हो गया।

इस पहल को शिक्षा अधिकारियों और विनोबा ऐप के माध्यम से सराहना मिली। हर्षाली जी बताती हैं, "हमारे पोस्ट को विनोबा का 'पोस्ट ऑफ मंथ' पुरस्कार मिला। यह सम्मान हमारे टीम के लिए महत्वपूर्ण है।"

हर्षाली जी ने दिखाया कि सही समय पर एक साधारण गतिविधि का कुशलतापूर्वक उपयोग शिक्षा में बड़ा बदलाव ला सकता है।

'पहले शिक्षक यहां आना नहीं चाहता थे'

पवनी (भंडारा): स्वागत है आपका एक ऐसे स्कूल में जहां 'बस्ता-मुक्त शनिवार' उपक्रम सरकार के लागू करने के 3 साल पहले से ही सोचा गया था, प्रभावी तरीके से लागू भी किया गया था और दिलचस्प उपक्रमों द्वारा छात्रों और अभिभावकों को स्कूल के विकास में शामिल किया गया। इसका श्रेय प्रधानाध्यापक श्री शिवशंकर घोडीचोर को जाता है, जो 2017 में यहाँ नियुक्त हुए थे। तब पवनी

का यह जिला परिषद का स्कूल बंद होने के कगार पर था। छात्रों की संख्या सिर्फ 6 रह गई थी, और कोई भी शिक्षक यहां आना नहीं चाहता था।

शिवशंकर जी ने अपने कार्य में व्यवस्थापन का अद्भुत नमूना पेश किया है। उन्होंने अपनी टीम स्कूल के मानदेय पर काम कर रही तीन शिक्षिकाओं तक सीमित नहीं रहने दी; स्कूल प्रबंधन समिति, मातृ-पालक संघ, और शिक्षक-पालक संघ से भी स्कूल की प्रतिष्ठा बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त किया।

सबकी एकजूट मेहनत से छात्र विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्टता दिखाने लगे, ब्लॉक और जिला स्तर पर पुरस्कार प्राप्त करने लगे। सात सालों में कई संशाधनों का निर्माण हुआ। सोशल मीडिया और ब्लॉग्स के द्वारा स्कूल का तेज़ी से

होता विकास सबकी नज़र में आया, और अब अभिभावक अपने बच्चों का यहाँ दाखिला करवाने के लिए कतार में होते हैं।

2017 में बंद होने जा रहे स्कूल के लिए यह सुखान्त ज़रूर है, पर सरकारी स्कूलों को देश में अग्रस्थान पर देखने का सपना पालने वाले विनोबा टीम के लिए यह एक नई शुरुवात है।

धैर्य और समर्पण की अनूठी कहानी

कड़मपाल (दंतेवाड़ा): शिक्षिका लक्ष्मी पुराण्डे ने जब कड़मपाल के पटेलपारा स्कूल में सहायक शिक्षक के रूप में अपना सफर शुरू किया, तो उनके सामने चुनौतियों की एक लम्बी फेहरिस्त थी।

पहले तो उन्हें पता चला कि पाँच कक्षाओं के लिए वो अकेली शिक्षिका है। विद्यालय के बाकी शिक्षक बदली लेकर दूसरी स्कूलों में जा चुके थे। बच्चे आर्थिक-सामाजिक रूप से कमजोर थे। वे कक्षा की पढ़ाई के बीच में ही गाय चराने या सब्जी बेचने के लिए चले जाते थे।

बच्चे गोण्डी बोलते थे और हिन्दी में कमजोर थे। उनके मन से पढ़ाई का डर निकालने के लिए लक्ष्मी जी खेल खेल में उनसे उनकी भाषा सीखने लगी। फिर हिन्दी और गोण्डी को जोड़कर कहानियाँ, कविताएँ, और विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से उन्होंने बच्चों की रुचि को विद्यालय में बनाए रखा।

उन्होंने बड़ा धैर्य रखकर अपनी शिक्षण विधि में स्थिति के अनुरूप बदलाव किए। कमजोर बच्चों के लिए मूर्त वस्तुओं का अवलोकन करने की प्रणाली अपनाई। खेल-खेल में ही शिक्षा की प्रक्रिया शुरू हो गई। "यह तरीका बच्चों को बहुत भाया। बच्चे अब भी पाठ के बीच में गाय चराने निकल जाते हैं। पर अब उनको स्कूल से लगाव हो गया है। वे स्कूल में पहले से अधिक समय बिताते हैं।"

विनोबा ऐप के रूप में लक्ष्मी जी को एक माध्यम मिल गया अपने छात्रों को व्यस्त रखने का। ऐप पर छात्रों के विडिओज डालकर वे छात्रों को अच्छा काम करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। लक्ष्मी जी को जिला और ब्लॉक स्तर के विनोबा पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। "विनोबा ने बहुत काम आसान कर दिये हैं," वे कहती हैं, "सारे शिक्षक सक्रिय हो गए हैं, क्यूंकि अब उनका काम दिखाने के लिए उन्हें मंच मिल गया है। ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों को सालों के बाद इससे पहचान मिलने लगी है।"

बच्चों का स्तर अभी भी सुधार की माँग करता है, लेकिन वे हर दिन अपने बच्चों के लिए नए-नए तरीके आज़माती हैं, उन्हें बेहतर शिक्षा देने की कोशिश करती हैं। लक्ष्मी जी के लिए यह सफर सिर्फ शिक्षक बनने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनके जीवन का मिशन बन चुका है, बच्चों के भविष्य को संवारने का, और निरंतर सीखते रहने का। ■

लक्ष्मी जी को रोज़मर्रा के आवागमन में भी कई कठिनाइयाँ होती हैं। बारिश के दिनों में कुआकोंडा से कड़मपाल तक आने वाले रास्ते पर एक पुलिया के पार पानी बहता हैं, इन दिनों में पुलिया पार करने से कपड़े खराब होते हैं। ऐसे में वे अपने साथ एक पर्यायी साड़ी लेकर जाती हैं। वे एक संपन्न परिवार से हैं, लेकिन ऐसी मुश्किलों का सामना करते हुए भी वे काम करना चाहती हैं... क्यूंकि बच्चों का स्नेह और अपनापन उन्हें हमेशा आगे बढ़ने का हौसला देता रहा।

कविता

चल रे चिंटू शाळेला

चल रे चिंटू शाळेला
कशाला रे कशाला ?
लिहायला अन् वाचायला
हसायला अन् शिकायला.....!!

चल रे चिंटू शाळेला
कशाला रे कशाला ?
झाडेच झाडे लावायला
हसतखेळत नाचायला...!!

चल रे चिंटू शाळेला
कशाला रे कशाला?
मूल्य अंगिकारायला
अंगी शिस्त पाळायला...!!

चल रे चिंटू शाळेला
कशाला रे कशाला
खूप शिकून शहाणं व्हायला
अन् पुढे पुढे जायला.....!!

चल रे चिंटू शाळेला
कशाला रे कशाला?
नाही अज्ञान रहायला
ज्ञान ग्रहण करायला.....!!

चल रे चिंटू शाळेला
कशाला रे कशाला
आपला देश घडवायला
आदर्श नागरिक बनायला...!!

येतो चल मी पण शिकायला
वाचायला आणि लिहायला...

मिनाक्षी पांडुरंग नागराळे
जि. प. प्राथमिक शाळा, कोकलगाव,
ता.जि.वाशिम, मो.९६६७६६३२५६

सिवनी: सिवनी की कलेक्टर श्रीमती संस्कृती जैन की अध्यक्षता में सिवनी जिले के शिक्षा विभाग के साथ उच्चस्तरीय बैठक और प्रशिक्षण आयोजित किये गये। बैठक में शिक्षा विभाग के संबंधित अधिकारियों को ओपन लिंक्स फाउंडेशन के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर श्री विश्वजीत पवार ने आचार्य विनोबा भावे शिक्षक सहायक कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी प्रदान की उन्होंने वर्तमान शिक्षा प्रणाली की चुनौतियों और समाधान पर चर्चा करते हुए FLN, बोलेगा बचपन (बैगलेस सैटरडे), उत्कृष्ट 10वीं व 12वीं, व उपस्थिति जैसे कार्यक्रमों के प्रस्ताव भी रखे।

चंद्रपूर: जिले के 10 शिक्षकों को 'पोस्ट ऑफ मंथ' पुरस्कार, 4 शिक्षकों को महावाचन क्लब गतिविधियों, 5 को सामाजिक जागरूकता, और 5 को SVEEP गतिविधियों के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में जिला शिक्षा अधिकारी अश्विनी सोनावणे के साथ उप-शिक्षा अधिकारी निवास कांबले और अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

भंडारा: जिले के 17 शिक्षकों को - जिनमें 6 शिक्षकों को 'पोस्ट ऑफ मंथ' पुरस्कार, 9 को 'स्पोकन इंग्लिश चैलेंज' की उपलब्धियों, और 3 को 'किलबिल मुक्त मंच' गतिविधियों – के लिए सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार भंडारा जिला परिषद के अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी कमलाकर रणदिवे और अधिकारियों द्वारा प्रदान किए गए।

सुकमा: हाल ही में विनोबा टीम द्वारा आयोजित जिला स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बैच 1 और बैच 2 में क्रमशः 174 और 127 व्यक्तियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों में BEOs, BRCs, क्लस्टर प्रिंसिपल, CAC, प्रधानाध्यापक और शिक्षक शामिल थे। कार्यक्रमों में प्रोजेक्ट ऑफिसर सागर गजभिये रिसोर्स पर्सन की भूमिका निभाई।

रायपुर: हाल ही में आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम में कुल 9 शिक्षकों को 'पोस्ट ऑफ मंथ' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। चारौदा, कोसरंगी और सरोना टेकरी के स्कूलों को 10वीं और 12वीं की परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में DEO विजय कुमार खंडेलवाल, DMC खेमचंद पटले, अविषेक तिवारी और हेमंत साहू उपस्थित थे।

जांजगीर-चांपा: जिले के 9 शिक्षकों को 'पोस्ट ऑफ मंथ' पुरस्कार और 4 शिक्षकों को 'बोलेगा बचपन' गतिविधियों में उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में अतिरिक्त कलेक्टर दुर्गा प्रसाद अधिकारी, SDM ममता मैडम, DMC राजकुमार तिवारी और जिला प्रोग्रामर रज्जन मिश्रा उपस्थित थे। विनोबा टीम की ओर से प्रोग्राम मैनेजर अज़हर शेख और प्रोजेक्ट ऑफिसर भूपेंद्र चंद्र उपस्थित थे।

गरियाबंद: हाल ही में आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम में नवंबर 2024 के लिए पाँच शिक्षकों को 'पोस्ट ऑफ मंथ' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जिला शिक्षा अधिकारी ए.के. सरस्वत, एपीसी मनोज केला और एस.के. चंद्राकर जैसे गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। प्रोजेक्ट ऑफिसर शुभम पटेल ने विनोबा टीम का प्रतिनिधित्व किया।

नागपुर: हाल ही में आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम में पाँच शिक्षकों को 'पोस्ट ऑफ मंथ' पुरस्कार और दो शिक्षकों को क्लब गतिविधियों के लिए सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार शिक्षा अधिकारी सिद्धेश्वर कालुसे के हाथों वितरित किए गए। इस अवसर पर उन्होंने शिक्षकों के कार्य की सराहना की। कार्यक्रम में प्रोजेक्ट ऑफिसर अतुल भगत ने विनोबा टीम का प्रतिनिधित्व किया।

वाशिम जिला परिषद स्कूलों में बदलाव की कहानी

वाशिम: IAS अधिकारी वैभव वाघमारे की प्रारंभिक शिक्षा जिला परिषद की स्कूल में हुई थी। इसलिए जब उन्होंने वाशिम जिले के मुख्य कार्यकारी अधिकारी का पद संभाला, तो स्वाभाविक रूप से उनके मन में इन सरकारी स्कूलों को और बेहतर बनाने का निश्चय हुआ।

चुनौती

वाशिम जिले के सरकारी स्कूलों की स्थिति का अध्ययन करने पर पता चला कि कक्षा 8 के बच्चे कक्षा 3 की किताबें भी ठीक से नहीं पढ़ पाते। तीन प्रमुख समस्याएं सामने आईं:

1. कमजोर शिक्षण स्तर: बच्चे बुनियादी कौशल में पिछड़ रहे थे।

2. जवाबदेही की कमी: "नो-फेल नीति" ने शिक्षक और छात्रों को सीखने के प्रति लापरवाह बना दिया।

3. शिक्षण पद्धतियों की खामियां: शिक्षक केवल औपचारिकता निभा रहे थे, पढ़ाने का उत्साह खत्म हो चुका था।

इसके साथ, भूख और कमजोरी से जूझते गरीब बच्चे, माता-पिता की लापरवाही और शिक्षकों की उदासीनता ने स्थिति को और बिगाड़ दिया। शिक्षा अब परीक्षा और अंकों तक सीमित है, जबकि सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास उपेक्षित है।

यह स्थिति सोचने पर मजबूर करती है कि बदलाव की शुरुआत कहाँ से होनी चाहिए।

समाधान की शुरुआत

वैभव जी बताते हैं, “हमारी योजना में दो मुख्य पहलू थे। पहला, फाउंडेशनल लिटरेसी और न्यूमेरसी यानी बच्चों की बुनियादी पढ़ाई और गणना कौशल को मजबूत करना और शिक्षकों को इसे सुनिश्चित करने के लिए प्रशिक्षित करना। इसके लिए एक व्यवस्थित प्रक्रिया बनाई गई और शिक्षकों को इसे लागू करने के निर्देश दिए गए। दूसरा, शिक्षकों को स्वेच्छा से स्कूल की दीवारों पर विनाइल बोर्ड लगवाने के लिए प्रेरित करना।“

शुरुआत में इसका विरोध हुआ। लोगों को

वैभव वाघमारे
मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जि.प. वाशिम

जागरूक करना, उन्हें इस दिशा में प्रेरित करना एक बड़ी चुनौती थी। इसके लिए व्यापक स्तर पर सभाएं आयोजित की गईं और शिक्षकों को प्रेरित किया गया। कुछ शिक्षकों और सरकारी कर्मचारियों ने इसे खुशी-खुशी अपनाया, तो कुछ ने इसे शासन का निर्णय मानकर स्वीकार किया।

पहला कदम: स्कूल की दीवारों को शिक्षक बनाया

शिक्षकों के लिए एक समिति बनाई गई, जिसमें 20-25 अनुभवी सदस्य शामिल थे। इस समिति ने बच्चों के बुनियादी कौशल जैसे - जोड़, घटाव, गुणा, भाग, मराठी पढ़ाई और अंग्रेज़ी बोलने पर ध्यान केंद्रित किया। हर दिन एक विशेष कौशल सिखाने का कार्यक्रम तय किया गया। शिक्षकों को व्हाट्सएप के माध्यम से रोज़ाना याद दिलाया जाता, ताकि पूरा सिस्टम सही ढंग से और जवाबदेही के साथ संचालित हो।

वैभव जी कहते हैं, "हमने स्कूलों की दीवारों को पाठशाला बनाया। गणित, वर्णमाला और अन्य ज़रूरी जानकारी दीवारों पर पेंट करवाई। इससे शिक्षक अनुपस्थित हों, तब भी दीवारें बच्चों को सिखाती रहें।"

दूसरा कदम: आंगनवाड़ी में बदलाव

जिला प्रशासन ने 'बोलकी आंगनवाड़ी' पहल शुरू की, जिसमें बच्चों को खेल-खेल में पढ़ाने की व्यवस्था की गई। इससे वे नई चीज़ें आसानी से समझ और याद कर पा रहे हैं। वाशिम महाराष्ट्र का पहला जिला बन गया है, जहां 90% आंगनवाड़ियां न केवल सुंदर और स्वच्छ हैं, बल्कि शिक्षा और स्वच्छता के मॉडल के रूप में उभरी हैं।

कुपोषण कम करने के लिए ठोस प्रयास किए गए, जैसे स्तनपान के 40 तरीकों को चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित करना। आंगनवाड़ी कर्मचारियों के सहयोग से जिले में कुपोषण के मामलों में बड़ा सुधार हुआ। पहले यह संख्या 13,500 थी, जो अब घटकर मात्र 74 रह गई है। इसके अलावा, 60 स्वास्थ्य उपायों को चित्रों और वीडियो में दस्तावेज़ित किया गया। शिक्षिकाओं को व्हाट्सएप के ज़रिए रोज़ाना तीन नई अवधारणाएं सिखाई जाती हैं, जिनके औचक निरीक्षण भी किए जाते हैं।

तीसरा कदम: तकनीकी का उपयोग

शिक्षा सुधार के लिए तकनीकी का उपयोग किया गया, जिसमें स्मार्ट बोर्ड, ई-लर्निंग मॉड्यूल और विनोबा ऐप शामिल हैं। वैभव जी के अनुसार, यह ऐप ज़रूरतों के अनुसार कस्टमाइज़ेबल है। इसके ज़रिए शिक्षकों के काम का डेटा ट्रैक करना और बच्चों के कौशल व परिणामों पर नज़र रखना आसान हुआ। इस प्रभावी योजना से शिक्षा का स्तर बढ़ाने में सफलता मिल रही है।

बदलाव

किसी भी बड़े मिशन के लिए टीम में सही तालमेल ज़रूरी है। छह महीने बाद टीम विनोबा ने जिले के स्कूलों का सर्वे किया, तो प्रगति दिखाई दी। शिक्षकों में बदलाव आया, कुछ ने खुद पैसे इकट्ठा कर विनाइल बोर्ड्स लगवाए। व्हाट्सएप संदेशों से शिक्षण में सुधार हुआ। शिक्षक समाज की प्रगति में योगदान देकर संतोष महसूस कर रहे हैं। सरकारी स्कूलों में आए बदलाव से अभिभावकों का भरोसा बढ़ा। अन्य गांवों के माता-पिता भी सहयोग करने लगे। वाशिम की इस यात्रा ने सिखाया कि सही प्रणाली और प्रेरित टीम से बड़ा बदलाव संभव है।

विनोबा का लाइब्रेरी बैग उपक्रम

स्मार्टफोन और इंटरनेट के इस युग में पढ़ाई के तरीके बदल गए हैं, लेकिन फिर भी छोटे ग्रामीण स्कूलों में पढ़ाई के पुराने तरीके ही अपनाए जाते हैं। किताबों की कमी, बच्चों का समझने में संघर्ष और शिक्षकों की जद्दोजहद, इन सभी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए ओपन लिंक फाउंडेशन ने 'लाइब्रेरी बैग' की शुरुआत की। यह बैग विशेष रूप से ग्रामीण और छोटे स्कूलों के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसमें चार स्तरों में किताबें रखी जा सकती होती हैं, जो बच्चों की सीखने की क्षमता के अनुसार होती हैं।

यह बैग दीवार पर भी लटका सकते हैं, जिससे स्कूलों में जगह की कमी का समाधान हो जाता है। इसके माध्यम से शिक्षक आसानी से बच्चों को उनके स्तर के अनुसार किताबें दे सकते हैं, और बच्चों के लिए पढ़ाई को आसान और सुलभ बना सकते हैं।

विनोबा ऐप पर गतिविधियों के माध्यम से मैंने 500 रिवॉर्ड पॉइंट्स कमाए और उन्हें इस पुस्तकालय बैग को प्राप्त करने के लिए रिडीम किया। इस अनोखे बैग की वजह से हमारी स्कूल में किताबें बिखरी नहीं रहतीं। छात्र किताबों का उपयोग करने के बाद उन्हें व्यवस्थित रूप से इस बैग में रखते हैं। 140 से अधिक किताबें रखने की क्षमता वाले इस बैग ने छात्रों में किताबों को सही तरीके से रखने की आदत विकसित की है और वाचन के प्रति एक नया उत्साह भी जगाया है।

- श्री सारंगधर बांगर जि. प. शाला, वडशिंगी, जि. बुलढाणा

इस आकर्षक और पारदर्शी लाइब्रेरी बैग ने बच्चों को किताबों की ओर आकर्षित करने का महत्वपूर्ण काम किया है। हर कक्षा और हर उम्र के बच्चे यहां से किताबें निकालकर देख सकते हैं। बच्चे एक बार किताब हाथ में लेकर उन्हें खोलकर देखने लग जाएं, तो धीरे-धीरे उन्हें पढ़ने भी लगेंगे। इस पहल के लिए विनोबा कार्यक्रम का धन्यवाद!

- श्री नीलांबर सिन्हा शासकीय शाला, उरमाल, जि. गरियाबंद

धमतरी में मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम अंतर्गत गतिविधियाँ

धमतरी: राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम अन्तर्गत कलेक्टर मैडम नम्रता गांधी के मार्गदर्शन में मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में नवाचार किया जा रहा है। जिसके अतंर्गत शासकिय पोस्ट मैट्रिक कन्या छात्रावास नगरी में छात्रावास अधीक्षक/अधीक्षिकाओं का किशोर मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में विभिन्न गतिविधीयों, पोस्टर एवं अन्य खेल गतिविधी के माध्यम से प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसका उदेश्य बच्चों में होने वाले मानसिक रोगी के लक्षणों के प्रति जागरूक एवं मानसिक रोगों को पहचान कर काउंसलिंग कार्य करना और किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं को समझना हैं। प्रशिक्षण मे विभिन्न गतिविधी कराई गयी जैसे भावना चक्र, सांप सिढ़ी का खेल, मैच बाक्स, भावनाओं को पहचानना, एकाग्रता को बढाने हेतु विभिन्न खेल कराया गया। यह प्रशिक्षण जिले के समस्त छात्रावासों में प्रारंभ किया जाएगा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ. श्रीकांत चंद्राकर, दिव्या साहू, टुनम देवांगन, अकांक्षा लाला एवं लोकेश कुमार साहू प्रशिक्षक के रूप में उपस्थित हुए।

सरकारी स्कूलों के छात्रों और शिक्षकों के लिए 'विकास पर्व'

मैसुरू: एक्सेल पब्लिक स्कूल और एक्सेल एम्पैथी फाउंडेशन के संयुक्त प्रयास से मैसुरू जिले में पहली बार 'विकास पर्व' नामक उद्यमिता और डिज़ाइन थिंकिंग कार्यशाला आयोजित की गई। यह छह सप्ताह का कार्यक्रम 23 अक्टूबर से 29 नवंबर, 2024 तक एक्सेल पब्लिक स्कूल के इनोवेशन सेंटर में चला। कार्यशाला में जिले के 36 सरकारी स्कूलों के 186 छात्र और 36 शिक्षक शामिल हुए। उन्होंने सामुदायिक समस्याओं के समाधान के लिए नवाचार और डिज़ाइन परियोजनाएं विकसित कीं।

'विकास पर्व' के माध्यम से छात्रों और शिक्षकों को नवाचार, अनुसंधान एवं विकास (R & D), उत्पाद विकास, इंजीनियरिंग डिज़ाइन प्रक्रिया और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों से परिचित कराया गया। इस प्रक्रिया में, उन्होंने स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिएसतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को एक मार्गदर्शक के रूप में उपयोग किया।

कूट प्रश्न 6

Make words using the letters - you must use the letter in the center circle.

कूट प्रश्न 5 का उत्तर: Send, Spend, Mends, Dyes, Spun, Sped, Modes, Nodes

कर्नाटक में 500 सरकारी स्कूलों को अपग्रेड करने का फैसला

बेंगलुरु: कर्नाटक कैबिनेट ने गुरुवार को 500 सरकारी स्कूलों को 'कर्नाटक पब्लिक स्कूल' के रूप में अपग्रेड करने का निर्णय लिया। इस परियोजना पर चार वर्षों में 2,500 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। इसके तहत राज्य सरकार एशियन डेवलपमेंट बैंक से 2,000 करोड़ रुपये का ऋण लेगी और 500 करोड़ रुपये का योगदान खुद करेगी। यह परियोजना जुलाई 2025 से जून 2029 के बीच लागू की जाएगी। कर्नाटक के कानून और संसदीय कार्य मंत्री एच. के. पाटिल के अनुसार, वर्तमान में राज्य के 204 तालुकों में 308 कर्नाटक पब्लिक स्कूल कार्यरत हैं।

द्वारका में नए सरकारी स्कूल की आधारशिला रखी गई

नई दिल्ली: शुक्रवार को मुख्यमंत्री आतिशी ने द्वारका सेक्टर 19 में एक नए सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल की आधारशिला रखी। उन्होंने कहा कि यह स्कूल क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ निजी स्कूलों को भी टक्कर देगा। 104 कक्षाओं वाला यह स्कूल भवन लगभग 2,000 से 2,500 छात्रों के लिए बनाया जा रहा है। इसमें एम्फीथिएटर, तीन पुस्तकालय, और बास्केटबॉल व बैडमिंटन कोर्ट सहित अन्य आधुनिक सुविधाएं होंगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि अब सरकारी स्कूलों को गंदे शौचालयों, जमीन पर बैठने वाले छात्रों और शिक्षकों की कमी के लिए नहीं पहचाना जाएगा।

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन बंगलो नं. 3, तात्या टोपे सोसायटी, शिवरकर गार्डन के सामने, पुणे-411040
संस्थापक: **संजय डालमिया** ■ सह संस्थापक: **रीना डालमिया**
संपादक: **अमोल मावकर**